समण संस्कृति संकाय

(A UNIT OF JAIN VISHVA BHARATI)

प्रश्न-पुस्तिका भरने से पहले निर्देश/नियमावली अवश्य पढ़ें।

नामः.....
Name:

पिता/पति/का नाम :.....
(Father / Husband)

पता/Address:.....

.....

.....

.....

यहां पर अपना पासपोर्ट साइज फोटो लगाना है

प्रतियोगिता का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए नजदीकी जैन विद्या केन्द्र का नाम:.....

पोस्ट /Post:.....जिला/Dist :.....

राज्य/State:.....पिन कोड/Pin Code : .....

मोबाईल/Mobile:.....वॉट्सएप नं./Whatsapp :.....

जन्म तिथि/DOB:.....शैक्षणिक योग्यता/Education :.....

धर्म : जैन/वैदिक/बौद्ध/अन्य संप्रदाय/Religious.....

तारीख/Date: **प्रतियोगी के हस्ताक्षर**

नोट :-

कृपया अपनी जानकारी जैसे– नाम, पिता/पति का नाम, पता अंग्रेजी/हिन्दी में लिखें ताकि प्रमाण-पत्र में आपका नाम सही दिया जा सके।

कृपया आप अपनी सुविधानुसार उत्तर-पुस्तिका भिजवाएं।

उत्तर पुस्तिका भिजवाने का पता :-

समण संस्कृति संकाय, आगम विभाग, जैन विश्व भारती, पोस्ट : लाडनूं (341306)
जिला : नागौर, राजस्थान (भारत) मोबाईल : 09785442373

ऑनलाईन आवेदकों हेतु नियमावली:

१. **'रायपसेणियं'** ग्रंथ की प्रश्न-पुस्तिका ऑनलाईन प्राप्त करने हेतु समण संस्कृति संकाय की वेबसाईट **https://sss.jvbharati.org** पर जाकर शुल्क रुपये १००/- ऑनलाईन जमा करें।

२. ऑनलाईन भुगतान की प्रविष्टि के पश्चात् आवेदन संख्या एवं प्रश्न पुस्तिका की मूल प्रति पी.डी.एफ. फॉरमेट में प्राप्त की जा सकेगी। इसे डाउनलोड करने के पश्चात् सुरक्षित कर लेवें।

३. परीक्षार्थी **'रायपसेणियं'** आगम की पी.डी.एफ. फाईल जैन विश्व भारती के ऑनलाईन साहित्य स्टोर **https:// books.jvbharati.org** एवं **https://sss.jvbharati.org/paystore/** से निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं।

४. प्रत्येक भुगतान की एक यूनिक ऑर्डर आई.डी. होगी, अतः ऑर्डर आई.डी. नम्बर का ध्यान रखें।

सामान्य नियमावली :

१. प्रश्नों का आघाार जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित **'रायपसेणियं'** ग्रंथ, द्वितीय संस्करण २०२१ रहेगा ।

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **'रायपसेणियं'** की पृष्ठ संख्या के साथ देना अनिवार्य है। पृष्ठ संख्या के अभाव में उत्तर अमान्य होगा।

३. सही उत्तर ग्रंथ के एक से अधिक पृष्ठों पर होने की स्थिति में किसी एक पृष्ठ संख्या का उल्लेख पर्याप्त माना जाएगा।

४. प्रश्न-पुस्तिका में निर्धारित स्थान में ही उत्तर लिखें, अन्य संलग्नक स्वीकार्य नहीं होगा।

५. प्रश्न-पुस्तिका में विभिन्न शैलियों के प्रश्न हैं, अतः निर्देशानुसार अपेक्षित उत्तर लिखें।

६. उत्तर केवल काले या नीले पेन से ही लिखें। पेंसिल या लाल पेन से लिखा उत्तर अमान्य होगा।

७. विषयानुक्रम से पहले के जो २० पृष्ठ हैं, उनमें किसी भी प्रश्न का उत्तर मिलने पर पृ. सं. के साथ 'भू.' अवश्य लिखें।

८. मात्राओं व शुद्धि का विशेष ध्यान रखें, अशुद्ध उत्तर अमान्य होगा।

९. उत्तर में कोई कांट-छांट मान्य नहीं होगी, व्हाइटनर का प्रयोग भी मान्य नहीं होगा।

१०. निर्धारित स्थान से बाहर लिखा हुआ उत्तर अमान्य होगा।

११. अधूरा उत्तर अमान्य होगा, केवल पृ. सं. अथवा केवल उत्तर भी अमान्य होगा।

१२. प्रश्न-पुस्तिका में निर्धारित स्थान पर अपना, नाम, पता, दूरभाष, उम्र, शैक्षणिक योग्यता, वॉट्सएप नंबर, ई-मेल आई.डी. इत्यादि सूचनाएं मांगी गई है, वे सभी स्पष्ट एवं हिन्दी/अंग्रेजी शब्दों में लिखें।

१३. मूल्यांकित प्रश्न-पुस्तिका या उसकी फोटो प्रति नहीं भेजी जाएगी।

१४. ७५% से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे।

१५. प्रथम चरण में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले १५० प्रतियोगियों को द्वितीय चरण में प्रवेश दिया जाएगा।

१६. प्रतियोगी अपनी उत्तर-पुस्तिका का पुनर्मूल्यांकन करवा सकते हैं। इसके लिए निर्धारित शुल्क १००/-ऑनलाइन जमा करवाने के बाद sss.jvbharti.org जाकर अपना पुनर्मूल्यांकन आवेदन पत्र भर सकते हैं। परिणाम घोषणा तिथि से २० दिन के भीतर पुनर्मूल्यांकन करवाया जा सकता है।

१७. प्रश्न-पुस्तिका (उत्तर लिखी हुई) दिनांक १५ दिसम्बर २०२१ तक लाडनूं कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए।

१८. प्रश्न-पुस्तिका लाडनूं कार्यालय भेजने के सात दिन बाद कार्यालय से जानकारी प्राप्त कर लें कि आपकी प्रश्न-पुस्तिका पहुंची है या नहीं।

१९. प्रश्न-पुस्तिका समण संस्कृति संकाय आगम विभाग में पहुंचने पर ही संस्था की जिम्मेदारी होगी।

२०. समण संस्कृति संकाय अपेक्षानुसार नये नियम भी जोड़ सकता है।

द्वितीय चरण नियमावली :

१. प्रथम चरण में वरीयता प्राप्त १५० परिक्षार्थी इसमें भाग ले सकेंगे।

२. परीक्षा संभवतः ऑनलाइन आयोजित की जाएगी।

३. प्रश्नों का आधार **'रायपसेणियं'** द्वितीय संस्करण २०२१ जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ रहेगा।

४. प्रश्न-पत्र हल करते समय प्रतियोगी आधार ग्रंथ **'रायपसेणियं'** का सहारा ले सकते हैं।

५. प्रश्न-पत्र में वस्तुनिष्ठ, सही गलत अथवा रिक्त स्थान की पूर्ति जैसे प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनका निर्देशानुसार उत्तर देना होगा।

६. द्वितीय चरण में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को क्रमशः २१०००, १५००० और ११००० की नकद राशि अथवा सममूल्य का पुरस्कार दिया जाएगा। ये तीनों पुरस्कार यथासंभव आचार्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

७. चतुर्थ पुरस्कार – वरीयता क्रम से ७ प्रतियोगियों को प्रत्येक को १००० रुपए की नकद राशि या सममूल्य का पुरस्कार दिया जाएगा।

८. पंचम पुरस्कार – द्वितीय चरण में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों (१४०) को स्वाध्याय सम्मान के रूप में रु. ५०० की नगद राशि अथवा सममूल्य का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

९. एक ही स्थान पर एकाधिक प्रतियोगी होने की स्थिति में पुरस्कार राशि बराबर-बराबर बांट दी जाएगी।

१०. परिणाम घोषणा के साथ परिणाम एवं उत्तर कुंजी sss.jvbharti.org पर प्रकाशित की जाएगी।

११. समण संस्कृति संकाय अपेक्षा अनुसार नए नियम भी जोड़ सकता है।

मूल्यांकन-पत्रक

क्र.सं.	मंथन-प्रकार (प्रश्नावली)	प्रश्नों की संख्या	पूर्णांक	प्राप्तांक
१.	वस्तुनिष्ठ	१० × २	२०	.....
२.	रिक्त स्थान पूर्ति	३० × २	६०	.....
३.	सही गलत चयन	३० × २	६०	.....
४.	गलती सुधार	३० × २	६०	.....
५.	अंकों में उत्तर	२० × २	४०	.....
६.	वर्ण 'अ, आ' से प्रारंभ	३० × २	६०	.....
७.	जोड़ी मिलाओ	४० × २	८०	.....
८.	संदर्भ बताओ	२० × ३	६०	.....
९.	मात्रा लगाओ	१० × ३	३०	.....
१०.	क्रम बनाओ	१० × ३	३०	.....
११.	प्रज्ञा वर्ग पहेली	२८ × २	५६	.....
१२.	कौन हूं मैं?	१५ × २	३०	.....
१३.	प्रश्न उत्तर	४ × ३ $\frac{१}{२}$	१४	.....
	योग	२७७	६००	

प्राप्तांक प्रतिशत.....उपलब्धि.....

हस्ताक्षर जांचकर्ता

प्रतियोगी-कोड

(रिक्त छोड़ें)

प्रतियोगिता समन्वयक

मंथन-I

वस्तुनिष्ठ

सही उत्तर पर ✓ का चिह्न लगाओ

पृ. सं.

१. बहत्तर कलाओं में से एक है– 217

(अ) मनवाद (ब) जनवाद ✓

(स) तनवाद (द) धनवाद

२. अणुवएस का अर्थ है– 193/235

(अ) उपदेश (ब) अपदेश

(स) अनुपदेश ✓ (द) निरुपदेश

३. चैत्य का अर्थ है– 122

(अ) सिद्ध स्थल (ब) तीर्थ क्षेत्र

(स) सिंह (द) देव प्रतिमा ✓

४. रत्न की एक जाति– 125

(अ) अंक ✓ (ब) बंक

(स) शंख (द) कंक

५. आत्मरक्षकों की नियुक्ति का एक हेतु– 123

(अ) युद्ध की निरंतर संभावना (ब) अहंकार का प्रदर्शन

(स) मनुष्यों की स्थिति (द) देवलोक की मर्यादा ✓

६. गृहीत धन को लौटा देना– 226

(अ) उपप्रदान ✓ (ब) अपप्रदान

(स) प्रदान (द) प्रमाद

७. सम का अर्थ है –

125

(अ) एकभाव (ब) एकीभाव ✓

(स) एकाभव (द) एकभव

८. डिम्ब का अर्थ है –

224

(अ) विघ्न ✓ (ब) बाधा

(स) संकट (द) कष्ट

९. मौर्य युग का प्रारम्भ किस सम्राट् से होता है?

13 भू.

(अ) सम्राट अशोक (ब) सम्राट चित्रगुप्त

(स) सम्राट धनानंद (द) सम्राट चन्द्रगुप्त ✓

१०. सफेद और लाल रंग से मिश्रित एक मणि –

125

(अ) स्फटिक रस (ब) ज्योति रस ✓

(स) मोति रस (द) मणि रस

मंथन-II

रिक्त स्थान पूर्ति

रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द या शब्द समूह से कीजिए–

		पृ. सं.
१.	ग्रहण कर जहां .....**सौमनस**..... वन है वहीं आये।	92
२.	....**वज्र/लोहभार को ग्रहण कर**.... वेतन किया।	203
३.	.....**प्रदक्षिणा**..... कर वन्दन करो, नमस्कार करो।	6/37
४.	.....**सन्नद्ध-बद्ध**..... हो कवच पहना।	143
५.	लोहभार ....**बांधा/ढोनेवाला/छोड़ा/छोड़, वज्र भार बांध**..... ।	200/200/201/203
६.	वे स्वच्छ और.....**विमल जल**..... से भरें हैं।	62
७.	वहां इसका नाम .....**'रायपसेणिय'**..... है।	11 भू.
८.	दर्भ का .....**बिछौना**..... बिछाया।	212
९.	.....**वक्षस्थल**..... पर पहना हुआ हार चमचमाने लगा।	4
१०.	उस लोह कुंभी को .....**कृमि कुंभी**..... की भांति देखा।	183
११.	..ज्ञानरूप/वे चतुष्कोण/पक्षियों के झूले/क्रीड़ा करते/मोहित करते/पर्युपासनीय/यह कर्मकर होते.. हैं।	31/62/64/65/ 66/78/124
१२.	वह प्रचुर .....**भक्त-पान**..... विसर्जित करता था।	138
१३.	ग्रहण कर .....**दोनों**..... तटों की मिट्टी ग्रहण की।	90/91
१४.	वे .....**कल्याणकारी**..... , मंगल, देव और ज्ञानमय हैं।	5
१५.	उसकी .....**गति**..... संगत थी।	226

१६.	यह आज्ञा .....**प्रत्यर्पित/शीघ्र ही प्रत्यर्पित**..... करो।	14/142/150/161/167/6/117
१७.	हम आपकी .....**पर्युपासना**..... करते हैं।	8
१८.	कुछ .....**श्रांत**..... होकर बैठे थे।	96
१९.	मुंड लोग मुंड की .....**उपासना**..... करते हैं।	169/170
२०.	प्रक्षालन कर .....**नंदापुष्करिणी**..... से बाहर निकला।	118
२१.	कोई भी स्थान .....**खाली**..... नहीं है।	200/202
२२.	स्थापित कर .....**रथ**..... से उतरा।	150/162
२३.	वर्तमान में भी वह कार्य .....**गतिमान**..... है।	7 भू.
२४.	क्रोधजयी आदि है इसलिए ही .....**क्षमा**..... आदि गुणो से युक्त है।	228
२५.	देवलोक में .....**युद्ध**..... भी होते हैं।	123
२६.	उसके राज्य में .....**दुर्भिक्ष**..... नहीं होता था।	223
२७.	चित्त एकाग्र हो गया और मन उसी विषय में .....**उपयुक्त**..... हो गया।	13
२८.	.....**ज्योतिभाजन**..... में ज्योति को बुझी हुई देखी।	191
२९.	चित्त की तरह .....**गृहिधर्म**..... स्वीकार किया।	204
३०.	जाव .....**सूचक**..... शब्द है।	122

मंथन-III

सही-गलत चयन

सही कथन के सामने √ व गलत कथन के सामने × का चिह्न कीजिए–

			पृ. सं.
१.	वन्दन कलश स्थापित थे।	√	22
२.	ऐसा सोच वन्दन किया, नमस्कार किया ।	√	5
३.	ऐसा कर सुलोचना और प्रतिक्रमण किया।	×	214
४.	भेड़ों को रोका।	×	143/144/ 158/168
५.	वन्दन कर, नमस्कार कर अपने-अपने नाम-कर्म बताओ।	×	6
६.	अष्टमंजिल ऊंचे श्रेष्ठ प्रासाद बनवाए।	√	203
७.	यावत् मणियों का दर्शन।	×	23/69
८.	सूर्याभ विमानाधिपति देव है।	√	125
९.	रांगा का भार बांधा।	√	201
१०.	लगाकर थोड़ा ऊपर बैठा।	×	4/101
११.	ते णं कालेणं ते णं समएणं पाठ है।	√	122
१२.	शान्त था, भयमुक्त था।	√	223
१३.	राजा प्रदेशी आत्मवादी था।	×	13 भू.
१४.	पताका के लिए दोनों विशेषण सार्थक हैं।	√	130
१५.	सघन है – ऐसा देखा।	√	200/202

१६.	कोई जार-मार लक्षण से मुक्त थीं।	×	128
१७.	इसमें कितना यथार्थ है केवली जाने।	√	230
१८.	मृत को तोला।	√	188
१९.	जल्दबाजी में कर्म करनेवाला।	×	224
२०.	नमस्कार हो जितभय जिन भगवान को।	√	222
२१.	मेघ गर्जना कर शीघ्र ही बिजलियां चमकायीं।	√	10
२२.	जीवन में कतिपय हर्ष-प्रकर्ष के अवसर आते हैं।	√	124
२३.	रत्नभार छोड़ा।	√	202
२४.	घोषणा सुनने के कुतूहल से उनके काम बड़े हो गए।	×	13
२५.	उसका शृंगार आदि सुलोचित था।	×	226
२६.	ऐसा कह पत्थरों की अटवी में अनुप्रविष्ट हुए।	×	190/192
२७.	यहां समवसृत हैं।	√	145/149/160
२८.	यह पुरातन आचार है।	√	8/31
२९.	अच्छरसा का भावार्थ है मति निर्मल।	×	134
३०.	इनकी तुलना शिरोरक्षक से की गई है।	√	123

मंथन-IV

गलती सुधार

प्रत्येक प्रश्न (कथन) के गलत शब्द को रेखांकित कीजिए और उसके स्थान पर सही शब्द को नियत बॉक्स में लिखिए–

			पृ. सं.
१.	यहां उपसर्ग शब्द चिन्तीय है।	अव्युत्सर्ग	230
२.	सुगन्धित पुष्पों की वर्षा की।	द्रव्यों/चूर्ण	94
३.	सील तुड़ाकर उस स्त्री को स्वयं ही देखा।	पुरुष	181
४.	तत्रस्थ भगवान यहां स्थित तुझे देखते हैं।	मुझे	5/161
५.	बच्चों के झूले हैं।	पक्षियों	64
६.	बलवान था और शत्रुओं के प्रति अकारण वत्सल था।	दुर्बलों	138
७.	उतना ही प्रवेश का अवकाश है।	स्थान	71/72
८.	औषधशाला में प्रवेश किया।	पौषधशाला	212
९.	सब के हाथों में वन्दन कलश थे।	कुछ	96
१०.	हाथों में ग्रीवा रक्षक उपकरण पहना।	गले	143
११.	किन्तु इसका कोई नवीन आधार प्राप्त नहीं है।	प्राचीन	12 भू.
१२.	वे पुर्णायु का भोग करवाते हैं।	करते	123
१३.	इसका रजस्त्राण सुविरचित था।	उसका	24
१४.	वहां अजीव नहीं देखा।	जीव	190
१५.	भाषा में इसे चालाक कहा जाता है।	चाकला	130

१६.	धोकर अचार लिया।	आचमन	99
१७.	उसके श्रेष्ठ कर कमल विकसित हो गये।	नयन	4
१८.	पर इस कर्म से यह संगत नहीं है।	कारण	177/181/183/184/186/188
१९.	भ्रमर फूलों का परिभोग कर रहे हैं।	कमलों	62
२०.	रथ को समर्पित किया।	स्थापित	143/144/150/158/162/168
२१.	जाकर नदियों का जल ग्रहण किया।	आकर	90/91
२२.	परिषद् ने अनुगमन किया।	निर्गमन	3/159
२३.	चढ़कर हाथ पैरों का प्रक्षालन किया।	उतरकर	118
२४.	उसका हंसना संगीत था।	संगत	226
२५.	वहां संप्राप्त है।	यहां	145/149/160
२६.	ये आर्य सुहस्ति के सामयिक हैं।	समसामयिक	13 भू.
२७.	छोड़ कर जहां पंडकवन है वहीं आये।	ग्रहण	92
२८.	वह चन्द्रकांत युवराज भी था।	सूर्यकान्त	140
२९.	कालुगणी को निर्मल भाव से।	विमल	5 भू.
३०.	अभयदेवसूरी ने इसका अर्थ कालाजल का तिलक किया है।	काजल	228

मंथन-V

अंकों में उत्तर

रिक्त स्थानों की पूर्ति संख्या (अंकों) में कीजिए–

		पृ. सं.
१.	.....1..... जैसे .....2..... विशेषण क्यों?	130
२.	गौतम! .....4..... पल्योपम की स्थिति प्रज्ञप्त है।	120/214
३.	उतर कर .....1..... शाटक वाला उत्तरासंग किया।	4
४.	इन .....4..... प्रकार के अलंकारों से अलंकृत-विभूषित हुआ।	98
५.	इस प्रकार .....3,4/3-4..... संख्यात टुकड़े किए।	190/191
६.	.....108..... पेया-वादकों की विक्रिया की।	36
७.	उन त्रिसोपान पंक्तियों के ऊपर .....8-8..... मंगल प्रज्ञप्त हैं।	63
८.	समुद्घात के .....7..... प्रकार हैं।	125
९.	उसके .....5..... अंग हैं।	230
१०.	उसका आयाम विष्कंभ .....8/16/100000..... योजन है।	79/80/84/85, 77/81/66
११.	.....4..... घंटावाले अश्वरथ पर आरूढ़ हुआ।	144/150/152/158/ 162/167/168
१२.	उन तोरणों के आगे .....2-2..... हय वीथियां हैं।	54
१३.	.....1..... भाग से विशाल कूटागारशाला बनाऊंगा।	209
१४.	ठाणं सूत्र में .....40..... मन का .....1..... कुंभ कहा है।	130
१५.	.....108..... ध्वज, ...108..... धूपदान संनिक्षिप्त हैं।	83
१६.	उन तोरणों के आगे .....2-2..... शालभंजिकाएं प्रज्ञप्त हैं।	53
१७.	प्रथम .....5..... सेनाएं युद्ध के लिए नियुक्त हैं।	123
१८.	वे मुखमडण्प .....100..... योजन लम्बे और .....50..... योजन चौड़े हैं।	71
१९.	जिसकी भुजाएं समश्रेणी में स्थित .....2..... ताल वृक्षों की तरह लम्बी हो।	9
२०.	वह ऊंचाई में ...60.... योजन ऊंचा, ...1.... योजन गहरा और ....1.... योजन चौड़ा है।	78

मंथन-**VI**

वर्ण 'अ, आ' से प्रारम्भ

प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का पहला वर्ण 'अ, आ' होना अनिवार्य है।

पृ. सं.

१. .....**आप्टे**..... में भी यही .....**अर्थ**..... मिलता है। 132

२. व्यवसाय सभा के ऊपर .....**आठ-आठ**..... मंगल है। 85

३. उस काल और उस समय .....**आमलकल्पा**.....नाम की नगरी थी। 3

४. नमस्कार हो भगवान .....**अर्हत**..... पार्श्व को। 222

५. पहनकर .....**अर्धहार**..... पहना । 98

६. इस प्रकार तुम भी व्यवहारी हो .....**अव्यवहारी**..... नहीं हो। 195

७. मुण्ड होकर .....**अगार**..... से .....**अनगारिता**..... में प्रव्रजित होगा। 220

८. .....**अर्चना**..... कर धूप दिया। 111

९. .....**अनुगमन**..... कर बाएं घुटने को ऊपर उठाया। 4

१०. विमान का .....**आंगन**..... वैसा सम था। 128

११. .....**अवगाहन**..... कर जल स्नान किया। 87

१२. गोत्र .....**अन्वर्थ**..... है। 124

१३. भगवान पार्श्व ने .....**अब्रह्मचर्य**..... को परिग्रह के .....**अन्तर्गत**..... माना है। 229

१४. .....**अभिषेक/अभिषिक्त**..... कर सरस गोशीर्ष चन्दन से चर्चित किया। 102/103/104/105/106/111/112/116

१५. ऐसा करके-कराके यह .....**आज्ञा**..... शीघ्र ही प्रत्यर्पित करो। 6

१६.	.....**अभिषिक्त**..... देवियां .....**अग्रमहिषी**..... कहलाती है।	122
१७.	बाण से .....**अरणि**..... मथी।	192
१८.	.....**आकर**..... तीर्थोदक ग्रहण किया।	90/91
१९.	श्रावस्ती नगरी के बीचोंबीच से .....**अनुप्रवेश**..... किया।	143
२०.	.....**अपक्रमण**..... कर वैक्रिय समुद्घात से समवहत हुए। (१५ ×)	7/8/88
२१.	यह अंगबाह्य .....**आगम**..... है।	12 भू.
२२.	....**अन्तेवासी**..... का अर्थ है निकट रहने वाला।	227
२३.	सबका .....**अलग-अलग**..... कार्यभार है।	123
२४.	.....**अत्यधिक**..... दासी-दास-गौ-भैंस-भेड़ें ग्रहण किए।	203
२५.	.....**अश्वरथ**..... को जोतकर उपस्थित किया।	142/150
२६.	यह .....**आचीर्ण**..... है। देवों! यह .....**अभ्यनुज्ञात**..... है।	8
२७.	.....**अहीन**..... और प्रतिपूर्ण दो शब्द हैं।	225
२८.	जहां ह्रद है वहीं .....**आया**..... ।	87/113
२९.	वह .....**आयोग**.....- प्रयोग में संलग्न था।	138
३०.	.....**आरूढ़**..... होकर जिस दिशा से .....**आया**..... था उसी दिशा में चला गया।	45/152

जोड़ी मिलाओ

प्रत्येक प्रश्न के सामने वह शब्द या शब्द समूह छांटकर (कोष्ठक में दिये गये शब्द या शब्द समूह में से) लिखिए जिससे उनकी युक्तिसंगत जोड़ी मिल जाए–

(बड़ा ढोल, नया, भुजा, बाण, गुफा, खोपड़ी, होत्था, शोभा, आग्नेय कोण, अत्यन्त मधुर, टोकरी, बंध, युगल, तना, गमनागमन, अच्युत, पलाश, पाथेय, भोजनग्रहण, श्री संपन्न, पिच्छी, झारियां, केतु, पर्वत, अभिषेक सामग्री, असफल, तोरण, मुक्तामाला, साहस्सीए, कूप, उत्तरपूर्वी, पायरासेहिं, नैऋत्य कोण, बेठकों, स्पंदित, हत्थक, इलायची, वक्तव्य, सुहं, सकहा)

			पृ. सं.
१.	चिह्न	.....केतु.....	
२.	लयन	.....गुफा.....	223
३.	निषीधिकाओं	.....बेठकों.....	133
४.	परिकर	.....बंध.....	49/51
५.	चालित	.....स्पंदित.....	191
६.	साहसिक	.....साहस्सीए.....	61
७.	छापे	.....हत्थक.....	224
८.	चंगेरी	.....टोकरी.....	102
९.	अकृतार्थ	.....असफल.....	10/57
१०.	लोमहस्तक	.....पिच्छी.....	204
११.	अहत	.....नया.....	83
१२.	बिल	.....कूप.....	100
१३.	प्रजेमनक	.....भोजनग्रहण.....	62
१४.	एला	.....इलायची.....	216
१५.	थी	.....होत्था.....	58
१६.	पथ्यदन	.....पाथेय.....	122
१७.	प्रालंब	.....मुक्तामाला.....	200
			98

१८.	बाहा	.....भुजा.....	47
१९.	किंशुक	.....पलाश.....	26
२०.	रितारित	.....गमनागमन.....	95
२१.	सश्रीकरूप	.....श्री संपन्न.....	22
२२.	मलय	.....पर्वत.....	61/92/223
२३.	वितार	.....अत्यन्त मधुर.....	131
२४.	स्कन्ध	.....तना.....	74
२५.	अतिछत्र	.....वक्तव्य.....	70/73/75/81/84
२६.	ईशानकोण	.....उत्तरपूर्वी.....	34/119
२७.	वेच्चे	.....बाण.....	79/130
२८.	शीर्षघटिका	.....खोपड़ी.....	82
२९.	संघाटक	.....युगल.....	54
३०.	प्रातराश	.....पायरासेहिं.....	228
३१.	दक्षिणपूर्वी	.....आग्नेय कोण.....	119
३२.	इन्द्राभिषेक	.....अभिषेक सामग्री.....	88
३३.	छाया	.....शोभा.....	75
३४.	होरंभा	.....बड़ा ढोल.....	38
३५.	दक्षिण-पश्चिम	.....नैऋत्य कोण.....	26
३६.	बारहवें-देवलोक	.....अच्युत.....	123
३७.	भृंगार	.....झरियां.....	55
३८.	शुभ	.....सुहं.....	127
३९.	अस्थि	.....सकहा.....	134
४०.	सिंहद्वार	.....तोरण.....	22

मंथन-VIII

संदर्भ बताओ

पद्य/गद्य/पद्यांश/गद्यांश कहां से लिया गया है–

संदर्भ ग्रंथ का नाम, पृष्ठ संख्या लिखे।

		सन्दर्भ ग्रंथ	पृ. सं.
उदाहरण	– व्यूतं विशिष्टं वानम्।	राय. वृ. प. २२६	१३०
१.	एभिः उत्कञ्चनादिभिः ..... संप्रयोगः।	राय. वृ. पृ. 275	225
२.	जिनसक्थीनि।	राय. वृ. प. 224	134
३.	तथा सेये ..... प्रत्ययादीति।	स्थानांग वृ. प. 408	13 भू.
४.	सामदामभेददण्डाः उपायाः।	अभिधान चिन्तामणि 3/400	226
५.	सिंहासनं वर्णनं च परिवारवर्जितम्।	राय. वृ. प. 213	133
६.	राज्ञः प्रदेशिनाम्नः ..... राजप्रश्नियम्।	पाक्षिक अवचूरि पृ. 77	11 भू.
७.	खञ्जनं – दीपमल्लिकामलः।	राय. वृ. प. 84	128
८.	निवाता वायोरप्रवेशात्।	राय. वृ. प. 151	132
९.	सेतुः मार्गस्तं ..... संविधानककारीति।	राय. वृ. प. 25	223
१०.	प्राप्तार्थः – अधिगतकर्मनिष्ठां गतः।	अहा. वृ. प. 83	126
११.	ईश्वराः – युवराजानः।	राय. वृ. प. 285	229
१२.	उच्चंतगो दन्तरागः।	राय. वृ. प. 86	129
१३.	कुंच् कौटिल्ये .....।	दचू. प. 37	224
१४.	उचितानि खचितानि।	राय. वृ. प. 77	127
१५.	गोमनस्य, शय्याः।	राय. वृ. प. 158	132
१६.	तलतालाः हस्ततालाः।	भग. वृ. 3/4	123
१७.	वैक्रियसमुद्घातेन ..... विक्षिपन्ति।	राय. वृ. प. 56	125
१८.	कौतुकानि ललाटस्य मुशलस्पर्शनादीनि।	उत्तरा. वृ. प. 490	228
१९.	उपाङ्गान्यपि अङ्गैकदेशप्रपञ्चरूपाणि।	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति वृ. प. 1	12 भू.
२०.	ते णं काले ते णं इत्यादि।	राय. वृ. प. 3	122

मंथन-IX

समुचित मात्राएं व अर्धाक्षर जोड़कर सार्थक वाक्य बनाओ –

		सूत्र सं.	पृ. सं.
१.	यत्रव परय मणपठक यत्रव परय जनप्रतम तत्रव उपगछत उपगय त चव। ..यत्रैव पौरस्तया मणिपीठिका यत्रैव पौरस्त्या जिनप्रतिमा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य.. ..तत् चैव ।।.....	308/319	105/107
२.	तय प्रक्षगहमडपय अत बहसमरमणय भमभग वकरत यव मणन पश। .....तस्य प्रेक्षागृहमण्डपस्य अन्तः बहुसमरमणीयं..... .....भूमिभागं विकरोति। यावत् मणीनां स्पर्शः ।.....	33	23
३.	एवमव सपवपरण सयभ वमन एककम दर अशत अशत कतसहत्र भवत इत अयत। .....एवमेव सपूर्वापरेण सूर्याभे विमाने एकैकस्मिन् द्वारे..... .....अशीति अशीति केतुसहस्रं भवति इति आख्यातम् ।.....	163	58
४.	सदयतन अनप्रदक्षणकव यत्रव उतरय नदपकरण तत्रव उपगछत उपगय त चव। .....सिद्धायतनं अनुप्रदक्षिणीकुर्वन् यत्रैव उत्तरीया..... .....नन्दापुष्करिणी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् चैव ।।.....	313	106
५.	तत तय सयभय दवय परयन चतत्र अगमहय चतष भदसनष नषदत। .....ततः तस्य सूर्याभस्य देवस्य पौरस्त्येन चतस्रः ....अग्रमहिष्यः चतुर्षु भद्रासनेषु निषीदन्ति ।।.....	659	119

६.	अलकरकसभ अनप्रदक्षणकव यत्रव उतरय नदपकरण तत्रव उपगछत उपगय। .....आलंकारिकसभां अनुप्रदक्षिणीकुर्वन् यत्रैव उत्तरीया..... .....नन्दापुष्करिणी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य ।।.....	556	115
७.	तत तय सयभय दवय समनकपरषदपनक दव अलकरक भड उपथपयत। .....ततः तस्य सूर्याभस्य देवस्य सामानिकपरिषदुपपन्नकाः..... .....देवाः आलङ्कारिकभाण्डं उपस्थापयन्ति ।।.....	284	97
८.	तष महदवजन उपर अट-अट मगलकन वज छत्रतछत्रण। .....तेषां महेन्द्रध्वजानां उपरि अष्ट-अष्ट मङ्गलकानि..... .....ध्वजाः छत्रातिछत्राणि ।।.....	232	76
९.	तष तरणन परत द्व द्व सहसन प्रज्ञत। तष सहसनन वणक यव दमन। .....तेषां तोरणानां पुरतः द्वे द्वे सिंहासने प्रज्ञप्ते ।..... .....तेषां सिंहासनानां वर्णकः यावत् दामानि ।.....	158	57
१०.	एवमव सपवपरण सयभ वमन चवर द्वरसहत्रण भवतत अयत। .....एवमेव सपूर्वापरेण सूर्याभे विमाने चत्वारि..... .....द्वारसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् ।.....	169	59

मंथन-X

क्रम बनाओ

शब्दों को क्रम से लिखकर सार्थक वाक्य बनाइये –

पृ. सं.

१. कर को और जानकर दिया माला पान सर्व स्वाद्य
वस्त्र अलंकारों अशन विषभावित पदार्थ खाद्य सुगंधित। — 212

.....जानकर अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य, सर्व वस्त्र, सुगंधित पदार्थ,.....

.....माला और अलंकारों को विषभावित कर दिया ।.....

.....

२. पांचों और को सहित ठप्पे धुलकाया रक्तचंदन सरस
हथेलियों के भीतों के गोशीर्ष अंगुलियों लगाये। — 94

.....भींतों को धुलकाया, गोशीर्ष और सरस रक्तचंदन के.....

.....पांचों अंगुलियों सहित हथेलियों के ठप्पे लगाये ।.....

.....

३. के के का है का और में है भावी भाग भाग उत्तर देव
वर्णन सूर्याभ प्रदेशी वर्णन जन्म रायपसेणिय पूर्व में मनुष्य विशद। — 15 भू.

.....रायपसेणिय के पूर्व भाग में सूर्याभ देव का विशद वर्णन है, और.....

.....उत्तर भाग में प्रदेशी के भावी मनुष्य जन्म का वर्णन है ।.....

.....

४. में की है की में है भी में रूप पद हेतु अर्थ ज्ञाता तृतीया
वृत्ति तृतीया माना संभावना वैकल्पिक विभक्ति। — 122

.....ज्ञाता वृत्ति में वैकल्पिक रूप में तृतीया पद भी माना है, हेतु.....

.....अर्थ में तृतीया विभक्ति की संभावना की है ।.....

.....

५. के हुई थी और को गुण करती अपनी शीलव्रत भावित
आत्मा विरमण विहरण करती बहुत द्वारा प्रत्याख्यान पौषधोपवास। — 177

.....बहुत शीलव्रत, गुण, विरमण, प्रत्याख्यान और पौषधोपवास.....

.....के द्वारा अपनी आत्मा को भावित करती हुई विहरण करती थी ।.....

.....

६. वे भी में हैं है और इनसे होती गया अधिक कहा स्पर्शवाली इष्टतर मणियां वर्ण

128

मनोज्ञतर गंध सुन्दर दिव्य कांततर कि अंत।

.....अंत में कहा गया है कि वे दिव्य मणियां इनसे भी अधिक.....

.....इष्टतर कांततर मनोज्ञतर और सुन्दर वर्ण-गंध-स्पर्शवाली होती हैं ।.....

.....

७. के है के कि हुई इन है रचना यह संकलन आधार इसकी और

13 भू.

पश्चात् जा अनुमान औपपातिक पर जीवाभिगम सकता सूत्रों किया।

.....इन संकलन सूत्रों के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है.....

.....कि इसकी रचना औपपातिक और जीवाभिगम के पश्चात् हुई है ।.....

.....

८. से में तो जाए लिए काष्ठ बुझ ज्योति ज्योतिभाजन तुम

192

निकालकर भोजन यदि पकाना ज्योति हमारे।

.....यदि ज्योतिभाजन में ज्योति बुझ जाए तो तुम काष्ठ से ज्योति.....

.....निकालकर हमारे लिए भोजन पकाना ।.....

.....

९. मैं पुरुष नहीं नमस्कार इस उस पश्चाताप कहा कर वाले

204

भांति भंते कर प्रकार की करनेवाला लोहभार वन्दन बनूंगा।

.....वन्दन कर, नमस्कार कर इस प्रकार कहा-भंते ! मैं उस.....

.....लोहभार वाले पुरुष की भांति पश्चात्ताप करने वाला नहीं बनूंगा ।.....

.....

१०. को में वही है पांच नहीं बाल बाणों पुरुष उपकरणवाला अशिक्षित अमेधावी अपर्याप्त

185

मंद विज्ञानवाला अदक्ष अकुशल छोड़ने समर्थ प्रदेशी प्रकार इसी।

....इसी प्रकार प्रदेशी ! वही पुरुष बाल, अदक्ष, अशिक्षित, अकुशल, अमेधावी, मंद विज्ञानवाला,..

....अपर्याप्त, उपकरणवाला पांच बाणों को छोड़ने में समर्थ नहीं है।.....

.....

मंथन-XI

प्रज्ञा वर्ग पहेली

अग्रांकित कोष्ठकों में प्रदर्शित वर्णों को ऊपर से नीचे या दांये से बांये जोड़ते हुए प्रश्नों के उत्तर नियत स्थान पर लिखिए–

* प्रश्नों के उत्तर वर्गों में अवश्य लिखें केवल रिक्त स्थानों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे।

१ कं	सि	२ का		३ म/मि		४ यु	व	रा	५ ज			६ ह
क		व्या		७ उ	पां	ग			ब्या		८ ज	ल
		त्म				वा				९ रि		ध
१० पु		११ क	व	१२ च		१३ न	ख	१४ सं	द	ष्ट		र
१५ ण्ड	द			क्क				कु				
री		१६ उ	च्छ/छ	ल		१७ सं		१८ ल	१९ क्ष	ण		२० हो
क						ला			द			त्था
	२१ नि	पु	ण	२२ शि	ल्पो	प	२३ ग	त			२४ ग	
	वा			बि			दा		२५ प्रा	त/तः	रा	२६ श
	२७ त	त		का				२८ वा	सा			रा
२९ त्य			३० द्यु						द			स
३१ नि	सी	यं	ति		३२ शृं	गा	ट	क		३३ व्य	ञ्ज	न

दांए से बाएं

पृ. सं.

१. ताल – .....**कंसिका**..... । (३) — 123

४. ईश्वर – .....**युवराज**..... (४) — 156/229

७. यह सूत्रकृत अंग का .....**उपांग**.....है। (३) — 12 भू.

८. कुछ ....**जल**.... रहे थे। (२) — 96

११. वर्म .....**कवच**.....। (३) — 228

१३. चावलों का एक विशेषण – .....**नखसंदष्ट**..... । (५) — 132

१५. दंड (....**ण्डद**....) (२) (उल्टा लिखें) — 263

१६. .....**उच्छल/उछल**..... – उच्छलेंति (३) — 243/95

१८. शरीरगत – स्वस्तिक-चक्र आदि चिह्न – ....**लक्षण**.... (३) — 225

२१. सूक्ष्म शिल्प को जानने वाला – .....**निपुणशिल्पोपगत**.....। (८) — 126

२५. प्रभातकालीन भोजन– .....**प्रातराश/प्रातःराश**.....। (४) 228/143

२७. चार प्रकार के वाद्य यंत्रों में से एक –.....**तत**.....। (२) 44/94

२८. .....**वासा**.....(वर्षा)। (२) 291

३१. .....**निसीयंति/आसयंति**.....–बैठना। (४) 133

२१. तीन मार्गों का मध्य भाग–.....**शृंगाटक**....। (४) 228

३३. मष, तिल आदि–.....**व्यञ्जन**.....।(३) 225

ऊपर से नीचे

१. अरिष्ट – .....**कंक**..... (२) 129

२. विषय वस्तु के अनुसार इसकी रचना कहीं .....**काव्यात्मक**.....है कहीं वर्णनात्मक और कहीं प्रतिपादनात्मक। (४) 12 भू.

३. .....**मउ/मिउ**.....(मृदु)। (२) 282/285

४. जो स्वस्थ कालखण्ड में उत्पन्न होता है –.....**युगवान**..... । (४) 126

५. प्रयोग .....**जब्या**.....। (२) (उल्टा लिखें) 223

६. .....**हलधर**..... वसन–बलदेव। (४) 129

९. .....**रिष्ट**.....– रत्न विशेष। (२) 125

१०. .....**पुण्डरीक**.....–श्वेत कमल। (४) 128

१२. सिंहासन के सात अवयवों में एक – .....**चक्कल**.....। (३) (130x) 129

१४. ..... प्रासाद-विमानों और निष्कुटों में घंटा के स्वर प्रवेश होने से वह सूर्याभ विमान लाखों प्रतिध्वनियों से .....**संकुल**..... हो गया। (३) 12

१७. .....**संलाप**..... अर्थात् परस्पर संभाषण। (३) 226

१९. .....**क्षद**.....– शीघ्र कार्य करने वाला । (२) (उल्टा लिखें) 126

२०. .....**होत्था**..... भूतकालिक क्रियापद है। (२) 122

२१. .....**निवात**.....जहां हवा का प्रवेश न हो। (३) 132

२२. ऊपर से ढ़का हुआ, कोष्ठक के आकार वाला यान –.....**शिबिका**..... । (३) 132

२३. सूर्याभ देव के शस्त्ररत्नों में से एक .....**गदा**.....। (२) 81/80-81

२४. रत्ता–गेय .....**गरा**..... से अनुरक्त है। (२) (उल्टा लिखें) 130

२५. स्नान कर, बलिकर्म कर ऊपर प्रवर .....**प्रासाद**..... में चला गया। (३) 158

२६. .....**शरासन**..... पट्टिका–धनुष की डोरी। (४) 228

२८. तत्पश्चात् वे सूर्याभ विमानवासी बहुत से वैमानिक देव और देवियां जो एकांत रतिक्रीड़ा में निमग्न, ...**त्यनि**..... प्रमत्त और विषय सुखों में आसक्त रहने वाले थे, (२) (उल्टा लिखें) 13

२९. .....**द्युति**..... शारीरिक आभरण जनित कान्ति। (२) 126

मंथन-**XII**

कौन हूं मैं?

मुझे पहचान कर मेरा नाम निर्धारित बॉक्स में लिखिए–

			पृ. सं.
१.	मेरा अर्थ मार्गदेशक है–	सेतुकर/सेतुमार्ग	223
२.	मैं हरे रंग की होती हूं–	फली/छिवाड़ी	129
३.	मैं भगवान पार्श्व का शिष्य था–	कुमारश्रमण केशी/केशी स्वामी	14 भू./16 भू.
४.	मेरे ऊपर यहां एक महान सिंहासन प्रज्ञप्त है–	मणिपीठिका	79
५.	कज्जल के घोल की गुटिका–	मषीगुलिका	129
६.	मैं नास्तिक तथा पूर्ण रूप से अधार्मिक था–	राजा प्रदेशी	225
७.	कुछ तेज लांघना–	प्लवन	126
८.	मेरा एक अर्थ है कपूर–	चन्द्र	129
९.	मैं देशी शब्द हूं, मेरा अर्थ है हड्डी–	अस्थि/सकहा	134
१०.	मेरा एकार्थ गोत्र है–	नाम	124
११.	मैंने इसका अर्थ शय्या किया है–	वृत्तिकार	132
१२.	मैं स्फटिक की तरह निर्मल हूं–	अच्छा/आकाश	127
१३.	बलपूर्वक आत्मप्रदेशों को बाहर निकालना–	समुद्घात	125
१४.	मुरज नामक वाद्य विशेष–	आलिंग/आलिङ्ग पुष्कर	128
१५.	विचारों के आदान-प्रदान का एक माध्यम–	भाषा	127

मंथन-**XIII**

प्रश्न उत्तर

१. बुद्धि के चार प्रकार के नाम बताते हुए वर्णन करें? 227

....बुद्धि के चार प्रकार हैं-....

...1. औत्पत्तिकी- अदृष्ट-अश्रुत-अननुभूत विषय का आकस्मिक ज्ञान होना।.....

...2. वैनयिकी- विनय से प्राप्त होने वाली शास्त्रार्थ संस्कारजन्य बुद्धि।.....

...3. कार्मिकी- कृषि-वाणिज्य आदि किसी भी कार्य में सघन एकाग्रता और अभ्यास से...

.....उत्पन्न होने वाली बुद्धि।.....

...4. पारिणामिकी- अवस्था के परिपाक से होने वाली बुद्धि।.....

२. सीमंकर और सीमंधर का अर्थ स्पष्ट करें? 223

.....जो नये-नये राजा सेवा में उपस्थित होते हैं उनकी मर्यादा करता है अर्थात् ऐसा...

.....करना चाहिए, ऐसा नहीं करना चाहिए-इस प्रकार की व्यवस्था करने वाला राजा....

.....सीमंकर कहलाता है।.....

....जो पूर्व राजाओं से समागत परम्पराओं का पालन करता है, वह सीमंधर कहलाता है।....

.....

.....

३. साम, दण्ड, भेद तथा उपप्रदान का अर्थ स्पष्ट करें? 226

.....ज्ञातावृत्ति में इन चारों के अर्थ दिए गए हैं-.....

...साम-परस्पर उपकार प्रदर्शन और गुणोत्कीर्तन द्वारा शत्रुओं को अपनें वश में करने का उपाय।...

...दण्ड- परिक्लेश की स्थिति में शत्रु पक्ष से धन का ग्रहण।.....

...भेद- जिस शत्रु पर विजय प्रापत करना हो उसके परिपार्श्व के व्यक्तियों को स्वामी आदि के स्नेह..

....से दूर कर फूट डलवाना।.....

.....उपप्रदान- गृहीत धन को लौटा देना।.....

४. चातुर्याम (चाउज्जामं) को स्पष्ट करें?

229/150/162

....भगवान पार्श्व का धर्म चातुर्याम धर्म कहलाता था। चार याम हैं-.....

..सर्वप्राणातिपात विरमण आदि। (सर्व मृषावाद विरमण, सर्व अदत्तादान विरमण, सर्व परिग्रह विरमण)..

...भगवान महावीर का धर्म पंच महाव्रतात्मक धर्म कहलाता है। इसमें अब्रह्म--मैथुन विरमण..

..को स्वतंत्र महाव्रत माना है। भगवान पार्श्व ने अब्रह्मचर्य को परिग्रह के अन्तर्गत माना है।..

...परिग्रह के स्थान पर बहिद्धादाण पाठ भी आता है।.....

.....